RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

मार्च-2023 | वर्ष - 15 | अंक : 02 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख - रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

'मजहब' का उद्देश्य और 'धर्म' का उद्देश्य

1. 'मजहब' या 'रिलीजन' का उद्देश्य क्या है? धर्म का उद्देश्य क्या है? क्या वे दोनों एक ही समान हैं और एक ही है? अथवा वे दोनों दो हैं और भिन्न-भिन्न हैं?

2. इन प्रश्नों का उत्तर दो सूक्तो में है, एक जिसमें भगवान बुद्ध और सुनक्खत की बातचीत का उल्लेख है, और दूसरा जिसमें भगवान बुद्ध और पोट्ठपाद ब्राह्मण की बातचीत का वर्णन है।

3. तथागत एक बार मल्लों के नगर अनुप्रिय में विहार कर रहे थे।

4. उस समय पूर्वाह्न में तथागत ने चीवर पहना तथा पात्र और चीवर ग्रहण किया और अनुपिय नगर में भिक्षाटन के लिए निकले।

5. रास्ते में उन्हें लगा कि कदाचिद् भिक्षाटन के लिए अभी थोड़ी देर रूकना चाहिये। इसलिये वह भग्गव परिव्राजक के आश्रम पर चले गये।

6. उन्हें आता देखकर भग्गव परिव्राजक उठ खड़ा हुआ, अभिवादन किया और बोला-''आप कृपया आसन ग्रहण करें। आपके लिये आसन सज्जित है।''

7. तब तथागत वहाँ विराजमान हुए। भग्गव परिव्राजक भी एक नीचा आसन लेकर पास ही बैठ गया। इस प्रकार बैठकर भग्गव परिव्राजक ने भगवान् बुद्ध को कहा -

8. ''कुछ दिन हुए, काफी दिन हुए हे भ्रमण गौतम! सुनक्खत्त लिच्छवी मेरे पास आया था। कहता था कि अब मैंने भ्रमण गौतम का शिष्यत्व त्याग दिया है। क्या जैसा उसने कहा, वैसा ठीक है?''

9. ''भग्गव! यह ऐसा ही है जैसा सुनक्खत्त लिच्छवी ने कहा।''

10. इसके आगे तथागत बोले-''कुछ दिन हुए, काफी दिन हुए, सुनक्खत लिच्छवी मेरे पास आया था और कहने लगा- 'अब मैं तथागत के शिष्यत्व का त्याग करता हूँ। अब मैं तथागत का शिष्य नहीं रहूँगा। जब उसने मुझे यह कहा, तब मैंने उससे पूछा-''सुनक्खत! क्या मैंने तुझे कभी कहा था कि सुनक्खत! तू आ और मेरा शिष्य बनकर मेरे पास रह?

11. ''भगवान्! नहीं, ऐसा आपने कभी नहीं कहा।''

12. ''अथवा तू ने ही मुझे कभी कहा था कि मैं तथागत को अपना 'गुरू' स्वीकार करता हूँ।

13. ''भगवान्! नहीं। ऐसा मैंने कभी नहीं कहा।''

14. ''तब मैंने उससे पूछा 'जब न मैंने ही तुझे कहा और न तू ने ही मुझे कहा तो क्या तो मैं हूँ और क्या तू है, जो तू त्याग नें की बात कर रहा है? मूर्ख कहीं के, क्या इसमें तेरा अपना ही दोष नहीं है?''

15. सुनक्खत्त बोला-'लेकिन भगवान्! आप मुझे सामान्य मनुष्यों की शक्ति से परे कोई प्रातिहार्य (=चमत्कार) नहीं दिखाते।

16. ''सुनक्खत्त! क्या मैंने कभी तुझे कहा था कि सुनक्खत तू आकर मेरा शिष्य बन जा, मैं तुझे सामान्य मनुष्यों की शक्ति से परे कोई प्रतिहार्य दिखाऊंगा?''

17. ''भगवान्! ऐसा आपने कभी नहीं कहा।''

18. ''अथवा सुनक्खत! तू ने ही मुझे कभी कहा था कि मैं भगवान का 'शिष्यत्व' स्वीकार करता हूँ, क्योंकि भगवान मुझे सामान्य आदमियों की शक्ति से परे कोई 'प्रातिहार्य' दिखायेंगे?''

19. ''भगवान्! नहीं। मैंने ऐसा नहीं कहा था।''

20. ''जब न मैंने ही तुझे कहा और न तूने ही मुझे कहा तो क्या मैं हूं और क्या तू है, जो तू त्यागने की बात कर रहा है? सुनक्खत्त! तू क्या सोचता है, चाहे सामान्य मनुष्यों की शक्ति से परे चमत्कार दिखाये जाये और चाहे न दिखाये जायें, क्या मेरे धर्म का यही उद्देश्य नहींहै कि जो मेरे धर्म के अनुसार आचरण करेगा, वह अपने दुःख का नाश कर सकेगा?''

21. ''भगवान! चाहे प्रतिहार्य दिखाई जायें और चाहे न दिखाई जाये निश्चय से तथागत की धर्म-देशना का यही उद्देश्य है कि जो कोई भी तथागत के धर्म के अनुसार आचरण करेगा, वह अपने दुःख का नाश कर सकेगा।''

22. ''सुनक्खत्त! जब धर्म के उद्देश्य की दृष्टि से इसका कोई महत्व ही नहीं कि कोई प्रतिहार्य दिखाई जाये अथवा न दिखाई जाय, तो तेरे लिये ही प्रातिहार्य प्रदर्शन का क्या मूल्य है? हे मूर्ख! अब तू देख कि इसमें तेरा अपना ही कितना कसूर है।''

23. ''लेकिन भगवान्! आप मुझे सृष्टि के आरम्भ का भी पता नहीं देते?''

24. ''अच्छा तो सुनक्खत्त! मैंने तुझे कब कहा था कि आ सुनक्खत्त, तू मेरा शिष्य बन जा, मैं तुझे सृष्टि के आरम्भ का पता बताऊंगा।

25. ''भगवान्! आपने नहीं कहा था।''

26. ''अथवा तू ने ही मुझे कभी कहा था कि मैं आपका शिष्य बनूंगा क्योंकि आप मुझे सृष्टि के आरम्भ का पता देंगे?

27. ''भगवान्! मैंने नहीं कहा था।''

28. ''जब न मैंने ही तुझे कहा और न तूने ही मुझे कहा तो क्या तो मैं हूँ और क्या तू है, जो तू त्यागने की बात कर रहा है? सुनक्खत्त! तू क्या सोचता है, चाहे मैं सृष्टि के आरम्भ का पता बताऊं, क्या मेरे धर्म का यही उद्देश्य नहीं है कि जो मेरे धर्म के अनुसार आचरण करेगा, वह अपने दुःख का नाश कर सकेगा?''

29. ''भगवान्! चाहे आप सृष्टि के आरम्भ का पता बतायें और चाहे न बतायें, निश्चय से तथागत की धर्म-देशना का यही उद्देश्य है कि जो कोई भी तथागत के धर्म के अनुसार आचरण करेगा, वह अपने दुःख का नाश कर सकेगा।''

30. ''सुनक्खत्त! जब धर्म के उद्देश्य की दृष्टि से इसका कोई महत्व ही नहीं कि चाहे सृष्टि के आरम्भ का पता बताया जाय और चाहे न बताया जाय, तो तेरे लिये ही इसका क्या मूल्य है, कि सृष्टि के आरम्भ का पता बताया जाए?''

31. इससे यह प्रकट होता है कि मजहब' सर रिलीजन' को तो सृष्टि के आरम्भ से सरोकार है, धर्म का एकदम नहीं।

साभार :
भगवान बुद्ध और उनका धर्म
पेज संख्या 252 से 254 तक
डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन

केवल सदाचार की पर्याप्त नहीं है, यह पवित्र और व्यापक होना चाहिये

1. कोई भी चीज या बात कब पवित्र बनती है? क्यों पवित्र बनती है?

2. हर मानव–समाज मे–चाहे वह आदिम अवस्था में हो और चाहे वह उन्नत अवस्था में हो–कुछ चीजें या विश्वास ऐसे होते हैं जो पवित्र माने जाते हैं और कुछ चीजें या विश्वास ऐसे होते हैं जो 'पवित्र' नहीं माने जाते।

3. जब कोई चीज या विश्वास 'पवित्रता' की सीमा में प्रवेश कर गया, इसका मतलब है कि उसके विरूद्ध आचरण नहीं किया सकता है। ठीक बात तो यह है कि उसे स्पर्श ही नहीं किया जा सकता। ऐसा करना सर्वथा निषिद्ध हो जाता है।

4. इससे भिन्न जो चीज या बात 'पवित्र' नहीं मानी जाती, उसके विरूद्ध आचरण किया जा सकता है, अर्थात् आदमी बिना किसी भय के अथवा आत्म–प्रताड़ना के उस विषय में जैसा चाहे कर सकता है।

5. 'पवित्र' का मतलब है 'धार्मिकता' लिए हुए। इस प्रकार की चीज या बात के विरूद्ध जाने का मतलब है मजहब की मर्यादा का उल्लंघन करना।

6. किसी भी चीज को 'पवित्र' क्यों बनाया जाता है? अपने प्रश्न को विषय के भीतर रखने के लिये, पूछा जा सकता है कि नैतिकता को 'पवित्र' क्यों बनाया गया?

7. नैतिकता के पवित्र बनाये जाने में, लगता है कि तीन बातों का प्रभाव पड़ा है।

8. पहली बात तो यह कि जो श्रेष्ठ है, सामाजिक हित की दृष्टि से उसे सुरक्षित रहना चाहिये।

9. इस प्रश्न की पृष्ठ–भूमि का सम्बन्ध है उस बात से जिसे हम 'जीवन–संघर्ष' और उसमें 'योग्यतम का जीवन बने रहना' कहते हैं।

10. यह प्रश्न 'विकास–वाद के सिद्धान्त' से सम्बन्धित है। सब कोई जानता है कि मानव–समाज में जो विकास हुआ है वह जीवन–संघर्ष के कारण हुआ है, क्योंकि आरम्भिक युग में भोजन–सामग्री बड़ी सीमित मात्रा में प्राप्त थी।

11. भयानक संघर्ष रहा है। प्रकृति के पंजे और दांत रक्त–रंजित रहे हैं।

12. ऐसे 'जीवन–संघर्ष' में जो भयानक और रक्त–रंजित होता है केवल 'योग्यतम' ही बचा रहता है।

13. समाज की मूल अवस्था ऐसी ही रही है।

14. बहुत प्राचीन काल में किसी न किसी ने यह प्रश्न अवश्य उठाया होगा कि क्या योग्यतम (= सबसे अधिक शक्ति सम्पन्न) ही श्रेष्ठतम भी माना जाना चाहिये? क्या जो निर्बलतम है, उसे भी संरक्षण देकर यदि बचाया जाय तो क्या यह आगे चलकर समाज के हित की दृष्टि से अच्छा सिद्ध न होगा?

15. लगता है कि उस समय के समाज की जो स्थिति थी, उस समय उसने एक स्वीकारात्मक उत्तर अवश्य दिया होगा।

16. तब प्रश्न पैदा होता है कि कमजोरों के संरक्षण का क्या उपाय है?

17. जो योग्यतम (= सबसे अधिक शक्तिशाली) हो उस पर कुछ प्रतिबन्ध लगाने से कम और किसी भी तरह काम चल ही नहीं सकता था।

18. इस स्थिति में नैतिकता का मूल और आवश्यकता छिपी हुई है।

19. इस नैतिकता के लिए 'पवित्र' बनाया जाना आवश्यक था, क्योंकि पहले पहले ये पाबन्दियाँ (=प्रतिबन्ध) योग्यतम (=सर्वाधिक शक्तिशाली) व्यक्तियों पर ही लगायी गई थी।

20. इसके बड़े गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

21. पहला प्रश्न तो यही पैदा होता है कि नैतिकता जब सामाजिक रूप ग्रहण करती है, तब कहीं यह असामाजिक (=सामाजिक हितों की विरोधिनी) तो नहीं हो जाती है?

22. ऐसा नहीं है कि चोरों में अपनी कुछ 'नैतिकता' ही न हो। व्यापारियों में भी नैतिकता होती ही है। एक जातिवालों में भीतरी नैतिकता रहती ही है और डाकुओं के झुण्ड में भी अपनी भीतरी नैतिकता रहती ही है।

23. लेकिन यह नैतिकता पार्थक्य की भावना लिये हुए है, इस नैतिकता में दूसरों के बहिष्कार की भावना निहित है। यह नैतिकता दल–विशेष के स्वार्थों का सरंक्षण करने के लिये हैं। इसलिये यह नैतिकता समाज–हित–विरोधिनी है।

24. यह इस प्रकार की नैतिकता की पार्थक्य और अपने में ही सीमित रहने की भावना ही है, जिससे इसकी समाज–हित–विरोधिनी प्रवृत्ति को क्रियाशील होने का अवसर मिलता है।

25. यही बात उस समय लागू होती है जब कोई भी एक दल अपने स्वार्थों की रक्षा करने के लिये नैतिकता का आश्रय लेता है।

26. समाज की इस दल–बन्दी का असर बड़ी दूर तक पहुंचता है।

27. यदि समाज में इस प्रकार के अ–सामाजिक दल बने रहेंगे, तो समाज हमेशा असंगठित रहेगा और टुकड़े–टुकड़े रहेगा।

28. एक असंगठित और टुकड़े–टुकड़े समाज का सबसे बड़ा खतरा यही है कि यह कई तरह के जीवन–मापों और आदर्शों को जन्म दे देता है।

29. जब तक लोगों के जीवन के माप–दण्ड समान न हों और जब तक लोगों के जीवन आदर्श समान न हों तब तक समाज परस्पर मिल–जुलकर रहने वाला समाज बन ही नहीं सकता।

30. जब इतने तरह के जीवन के मापदण्ड रहेंगे और इतनी तरह के जीवन आदर्श रहेंगे तो व्यक्ति के लिए मन का अविरोधी–भाव बनाये रखना असम्भव है।

31. बुद्धिपूर्वक विचार करने से किसी की जनसंख्या आदि की दृष्टि से जो और जितना जिसका अधिकार होना चाहिये वह न होकर यदि किसी समाज के एक हिस्से की किसी दूसरे हिस्से पर अनुचित प्रधानता बनी रहेगी तो इसका अवश्यम्भावी परिणाम परम्पर का कलह होगा।

32. कलह को रोकने का एक ही उपाय है कि सभी के लिये नैतिकता के समान नियम हों और सभी उन्हें पवित्र मानें।

33. एक तीसरा कारण भी है जिसके कारण नैतिकता पवित्र मानी जानी चाहिये और इसको सर्वमान्य होना चाहिये, व्यक्ति की उन्नति के संरक्षण के हित में।

34. जहाँ 'जीवन–संघर्ष' है अथवा जहां वर्ग–विशेष का शासन है, वहाँ व्यक्ति का हित सुरक्षित नहीं है।

35. दलबन्दी व्यक्ति को चित्त की वह अविरोधी–भावना प्राप्त करने ही नहीं देती जो तभी सम्भव है जब समाज में समान 'जीवन–माप' हों और समान 'जीवन–आदर्श' हों। व्यक्ति के विचार बहक जाते हैं और वह एकता देख ही नहीं सकता।

36. दूसरे, दलबन्दी में पक्षपात रहता है और न्याय की आशा नहीं रहती।

37. दलबन्दी से वर्ग जड़ीभूत हो जाते हैं। मालिक हमेशा मालिक बने रहते हैं, गुलाम हमेशा गुलाम बने रहते हैं। मालिक हमेंशा मालिक बने हैं, मजदूर हमेशा मजदूर बने रहते हैं। विशिष्ट अधिकारी हमेशा विशिष्ट अधिकारी ही रहते हैं और गुलाम हमेशा गुलाम ही रहते हैं।

38. इसका मतलब है कि कुछ लोगों के लिये तो स्वतंत्रता हो सकती है, किन्तु सभी के लिये नहीं। इसका मतलब हुआ कि चन्द लोगों के लिये समानता हो सकती है, किन्तु अधिकांश के लिए नहीं हो सकती।

39. इसका इलाज क्या है? एक ही इलाज है कि भ्रात–भावना को सर्व–मान्य और प्रभावशाली बनाया जाय।

40. भ्रात–भाव क्या है? आदमी हर आदमी को अपना भाई समझे–यही नैतिकता है।

41. इसीलिये भगवान बुद्ध ने कहा कि धर्म नैतिकता है और जिस प्रकार धर्म पवित्र है, उसी प्रकार नैतिकता भी पवित्र है।

साभार :
भगवान बुद्ध और उनका धर्म
पेज संख्या 256 से 259 तक
डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन

बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम जी के कुछ प्रेरक विचार ....

तमन्ना सच्ची है, तो रास्ते मिल जाते हैं।
तमन्ना झूठी है, तो बहाने मिल जाते हैं।।
जिसकी जरूरत है रास्ते उसी को खोजने होंगे।
निर्धनों का धन उनका अपना संगठन है।

चाहने वालों की चाहत को पूरा करने के लिए,
चाहने वालों को ही साधन खोजने होंगे।
छोटे साधन को बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करके
बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

बहुजन समाज पार्टी बनाना आसान काम है,
परन्तु बहुजन समाज बनाना मुश्किल काम है।
मैं इस मुश्किल काम को अंजाम देने में लगा हूँ,
मैंने मांगने वाले लोगों में देने की आदत डाल दी है।

अकेले एक जाति का संगठन बनाकर, उस जाति के हितों की सुरक्षा नहीं की जा सकती बल्कि छः हजार जातियों में तोड़े गये लोगों को जोड़कर भाईचारा पैदा करके बहुजन समाज बनाकर सभी जातियों के हितों की रक्षा की जा सकती है।

15 मार्च
मान्य. कांशीराम के जन्म दिन के महान अवसर पर उन्हे
हार्दिक श्रृद्धांजलि

उमेशवरी देवी
एडवोकेट
कोर्ट चेम्बर डी.एम. बिल्डिंग के ठीक पीछे
कलेक्ट्रेट कम्पाउंड, कानपुर नगर

मा. रामदीन अहिरवार
पूर्व ग्राम प्रधान/पूर्व जेल विजिटर
उ.प्र. शासन

बाबा साहेब का 'बौद्धमय भारत' बनाने का सपना भी हम पूरा करेंगे - कांशीराम

नागपुर (विशेष प्रतिनिधि द्वारा) गत 30 मार्च 2002 को दक्षिण नागपुर (महाराष्ट्र) में ऊँटखाना के डा. अम्बेडकर क्रीडा मैदान पर जनअभिनन्दन सभा सम्पन्न हुई। नागपुर महानगर पालिका के चुनाव में बसपा के 9 नगर पार्षद चुनकर गये। इस उपलब्धि में मान्य. कांशीराम जी की प्रमुख उपस्थिति में नगर पार्षदों का हार्दिक अभिनन्दन तथा मतदाताओं का जाहिर आभार व्यक्त करने के लिए इस जनसभा का आयोजन किया गया । इस मौक पर सभा मंच पर मान्य. कांशीराम जी के साथ प्रदेशाध्यक्ष सिद्धार्थ पाटिल, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रोफें. पी.एस. चंगोले, दशरथ मडावी, प्रदेश महिला संयोजक श्रीमती नन्दाताई, पूर्व सांसद रामहेडाऊ, साप्ताहिक बहुजन नायक के कार्यकारी सम्पादक प्रोफे. महेन्द्र राऊत, नागपुर महानगर के अध्यक्ष ए.जी. तिरपुरडे, नगर पार्षद राहुल तेलंग, दीपक जाम्भुलकर, संजय जायसवाल, कविता लाडगें, विकास नागभिडे, राजेन्द्र दरवाडे, एड. अशोक यावले, विश्रातीताई झामरे, पुष्पाताई बेडसे तथा नागपुर महानगर कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रस्ताविक उत्तम शेवडे तथा कार्यक्रम का संचालन भैयाजी खेरकर ने किया। प्रोफे. पी.एस. चगोले द्वारा प्रकाशित बहुजन समाज दिवस चिरायु हो पोस्टर तथा 'मानवतावाद के प्रबल समर्थक फोटो का विमोचन मान्य. कांशीराम जी ने इस मौके पर किया। इसी प्रकार राहुल तेलंग द्वारा सम्पादित आज का सुरेख भारत मासिक तथा उत्तम शेवडे द्वारा सम्पादित 'बहुजन मीडिया पत्रिका का विमोचन भी मान्य. कांशीराम जी ने किया।

मान्य. कांशीराम जी

इस मौके पर सभा को सम्बोधित करते हुए बसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मान्य. कांशीराम जी ने कहा कि दक्षिण नागपुर की सभा में इकट्ठा हुये मेरे सारे साथियों बड़ी खुशी की बात है कि नागपुर महानगर पालिका में बहुजन पार्टी के टिकट पर 9 नगर 4 पार्षद चुनकर आयें है। उनकी तरफ से मेरा स्वागत किया गया है उसके लिए मैं आप लोगों का बहुत–बहुत धन्यवादी हूँ।

आपने आगे कहा कि – उत्तर नागपुर में काफी बड़ा इकट्ठ हुआ, उसमें मैंने विस्तार से दो घन्टे का समय लेकर अपनी बात अपने समाज के सामने रखी है, और खुशी का इजहार किया कि जिन महार समाज के लोगों ने बाबा साहेब डा. अम्बेडकर के मूवमेन्ट को महाराष्ट्र से बाहर धकेला और मैंने उत्तर भारत के चमार समाज के लोगों को तैयार करके बाबा साहेब अम्बेडकर महात्मा ज्योतिबा फुले, शाहू जी महाराज और उनके 1848 से लेकर 1956 तक 108 साल लम्बे संघर्ष के बाद चमार समाज के लोगों को समझा कर मैंने उनको रजामंद किया। उन्होंने इस मूवमेन्ट को अपनाया। उत्तर प्रदेश में 1989 में बसपा के 15 विधायक तथा 2 सांसद चुनकर आये, और पार्टी को मान्यता प्राप्त हुई। उसके कारण चुनाव आयोग ने पार्टी का चुनाव चिन्ह ''हाथी' जो महाराष्ट्र में गंवाया गया था, वो बसपा ने फिर से हासिल किया। उसके बाद 4 और राज्यों में, जहाँ चमार जाति के भाई बड़ी संख्या में रहते हैं, उन्होंने मेरी बात को माना। फुले–शाहू–अम्बेडकर की विचारधारा को समझा और अपनाया, जिसके कारण चुनाव आयोग द्वारा बहुजन समाज पार्टी 1996 में राष्ट्रीय पार्टी घोषित की गई। चुनाव आयोग की तरफ से घोषणा हुई कि पांच राज्यों में मान्यता प्राप्त करके बहुजन समाज पार्टी, फुले–शाहू–अम्बेडकर की विचारधारा को अपनाने वाली पार्टी अब राष्ट्रीय पार्टी बन चुकी है। 1996 में बसपा 8वें नम्बर की पार्टी थी। आज जब मैं आप लोगों के बीच में बोल रहा हूँ, तो यह बी.जे.पी. और कांग्रेस के बाद तीसरे नम्बर की राष्ट्रीय पार्टी है। इसलिए साथियों, आज बसपा का नारा है कि 'बसपा की क्या पहचान' नीला झण्डा हाथी निशान।

आपने आगे कहा कि साथियों, आज तक जो महाराष्ट्र के महार समाज के लोगों ने रिपब्लिकन पार्टी की बात को मानकर कि – बाबा साहेब अम्बेडकर की मूवमेन्ट बहुजन समाज पार्टी को मानने वाले लोगों के माध्यम से जो मैं बार–बार कहता था कि बाबा साहेब अम्बेडकर के मूवमेन्ट को आप लोगो ने महाराष्ट्र में कामयाब "होऊ सकल नाही" बहुजन समाज पार्टी के पैर नहीं लगने दिये। लेकिन आज लम्बे समय के बाद मेरे अथक प्रयास के बाद जब बहुजन समाज पार्टी को मानने वाले लोगों के माध्यम से जो मैं बार–बार कहता था कि बाबा साहेब अम्बेडकर के मूवमेन्ट को आप लोगों ने महाराष्ट्र से धक्के देकर बाहर निकाला है यह अच्छा नहीं किया। बाबा साहेब अम्बेडकर का क्या कसूर था, इसलिए अगर महाराष्ट्र के महार ही धक्के देकर महाराष्ट्र से बाहर निकालेंगे तो उनको कौन अपनायेगा ? लेकिन खुशी की बात है कि उत्तर भारत में पांच सूबों (उ.प्र., म.प्र., पंजाब, जम्मू कश्मीर, हरियाणा) में चमार समाज में लोगों ने उनको अपनाया। और बाबा साहेब अम्बेडकर या फुले–शाहू–अम्बेडकर की मूवमेन्ट को अपनाकर बहुजन समाज पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी बनाया। जो आज देश में तीसरे नम्बर की राष्ट्रीय पार्टी है। मुझे भरोसा है कि आने वाले समय में हमारे अथक प्रयासों से बहुजन समाज पार्टी जल्दी ही तीसरे नम्बर की नहीं बल्कि पहले नम्बर की राष्ट्रीय पार्टी होगी। इसलिए साथियों, आज बहुजन समाज पार्टी राष्ट्रीय पार्टी बनी है, और पहले नम्बर की राष्ट्रीय पार्टी बनने की कोशिश में है। और महाराष्ट्र के महार समाज के लोग भी मान चुके है कि बाबा साहेब अम्बेडकर का मूवमेन्ट अगर महाराष्ट्र में भी आ जाये तो हमें कोई एतराज नहीं है। इस रवैये का स्वागत करने के लिए मै। आप लोगों के बीच में आया हूँ। जो आप लोगों ने अपना रवैया बदला है, जो महार समाज के नेताओं ने बार–बार रट लगाई है कि बाबा साहेब अम्बेडकर मूवमेन्ट कामयाब "होऊ सकत नाही" और मैं कहता रहा कि – "होऊ सकत है।"

मान्य कांशीराम जी ने आगे कहा कि – पिछले कई सालों "होऊ सकत नाही" और "होऊ सकत है" इस फैसले का स्वागत करने के लिए मैं आप लोगों के बीच में हाज़िर हुआ हूँ और जब महाराष्ट्र के महार समाज के लोगों ने यह बात मान ली है, और मेरा काम आसान हो गया कि जिस मूवमेन्ट को मैं फुले–शाहू–अम्बेडकर की मूवमेन्ट कहता हूँ और आप लोग मेरी बात मानकर "बाबा तेरा मिशन अधूरा – बी.एस.पी. करेगी पूरा, फुले तेरा मिशन अधूरा – बी एस.पी. करेगी पूरा, शाहू मेरा मिशन अधूरा–बी. एस.पी. करेगी पूरा" यह मेरी बात मानकर आप लोगों ने इस किस्म के नारे लगाने शुरू किये है, तो मेरा काम आसान हो गया। अब मैं फुले के माली समाज के लोगों को और छत्रपति शाहू महाराज के कुर्मी समाज के लोगों को तैयार करके यह बात कहकर कि आज बहुजन समाज पार्टी, जिसको मैं आज तक कहता रहा हूँ कि यह महाराष्ट्र की रूटलेस (जडहीन) पार्टी है, आज मैं कह सकता हूँ कि आज जब महार समाज उसका बेस (आधार) बन गया है, तो यह आधारहीन नहीं, बल्कि आधार वाली पार्टी है। इसलिए मैं शूद्र समाज की जातियों को समझाकर एवं संगठित करके जो बहुजन समाज बनाने का काम था, जो हम देश भर में काफी आगे बढ़ा चुके हैं, जिसे हम महाराष्ट्र में भी आगे बढ़ा सकेंगे। इसलिए साथियों, मैं यह बात कहने के लिए आप लोगों का धन्यवाद करने के लिए आज आप लोगों के बीच में नागपुर में हाजिर हुआ हूँ। आज मैं आपने लोगों को भरोसे से कह सकता हूँ कि आप लोगों ने अपनी जिम्मेदारी निभाई है, इसलिए बाकी काम आप लोग मेरे ऊपर छोड़ें। आपको रिपब्लिकन पार्टी के नेता कहते रहे है कि यह काम "होऊ सकत नाही" और मैं कहता रहा हूँ कि "होऊ सकत है" और इस काम को करके दिखाना, कामयाबी से करके दिखाना, यह मेरी जिम्मेदारी है। आप लोग मेरे पीछे चलें। मैं आगे बढ़कर इस का काम को करके दिखाऊँगा। महाराष्ट्र में फुले–शाहू–अम्बेडकर का मूवमेन्ट को आगे बढ़ाकर दिखाऊँगा और इसके आधार पर मनुवादी समाज व्यवस्था का मुकाबला करके मानवतावादी समाज व्यवस्था को आगे बढ़ाऊँगा।

आपने आगे कहा कि – बाबा साहेब अम्बेडकर ने हमारे समाज को सलाह दी थी कि हमें खासकर के 1936 में दूसरी महार परिषद बोम्बे में करने के बाद उन्होंने फैसला लिया कि हमें जातियों का नाम बदलने से हमारा काम नहीं चलेगा। धर्म परिवर्तन करने से ही हमारी बात आगे बढ़ेगी। अगर मनुवादी समाज व्यवस्था को हटाकर मानवतावादी समाज व्यवस्था का निर्माण करना है तो हमें बौद्ध धर्म अपनाना होगा। इसलिए बाबा साहेब अम्बेडकर ने आपके इसी नागपुर में ही कहा था कि भारत देश को मैं बौद्धमय देश बना सकूँ। लेकिन दुःख की बात है कि बाबा साहेब अम्बेडकर को बुद्धिष्ट बने हुए 45 साल बीत गये हैं। और पांच साल के बाद उस धर्म परिवर्तन की गोल्डन जुबली होगी और पांच साल के अन्दर कोई जनगणना नहीं होगी। जनगणना तो 2001 के बाद 2011 में होगी। लेकिन 2001 की जनगणना के आधार पर बाबा साहेब अम्बेडकर का सपना अधूरा भी पूरा नहीं हुआ है, आधा भी पूरा नहीं हुआ है। अभी तक भी 2001 की जनगणना के आधार पर एक करोड़ भी बुद्धिष्ट भारत में नहीं है। इसलिए मैंने और मायावती ने फैसला किया है कि 2006 में जब बाबा साहेब अम्बेडकरे धर्म परिवर्तन के 50 साल पूरे होंगे, तो हम लोग उत्तर प्रदेश में चमार समाज के लोगों को सलाह देंगे कि आप लोग बौद्ध धर्म अपनायें और मुझे पूरा भरोसा है कि मेरी सलाह को मानकर सिर्फ उत्तर प्रदेश में 2 करोड़ से ज्यादा चमार समाज के लोग बौद्ध धर्म अपनायेंगे। इसलिए बाबा साहेब अम्बेडकर जो कि दूसरे काम आज तक भी अधूरा रहा है, उसको भी हम लोग आगे बढ़ायेंगे। इसलिए आप लोगों को अपने बारे में सोचकर बाबा साहेब अम्बेडकर का पहला सपना राजनीति में इस मूवमेन्ट को को कामयाब बनाने का सपना, उसमें आप कहाँ तक पहुँचे है, और दूसरा जो भारत को बौद्धमय बनाना चाहते थे, उसमें एक कदम भी आप लोग नहीं पहुँचे हैं। यह जो कमियां कमजोरी आप लोगों ने दिखाई है, इस कमी और कमजोरी को दूर करने की जिम्मेदारी आज मैंने अपने कन्धों पर ली है, और इसे मैं कामयाब बनाने की कोशिश में लगा हूँ और कुछ हद तक कामयाबी भी मिली है और पूरी कामयाबी दिलाकर रहूँगा। इस भरोसे के साथ मैं आप लोगों को मुबारकबाद देते हुए आप लोगों को मैं भरोसा देता हूँ कि आप मेरे पीछे चलें। आप लोगों ने बाबा साहेब अम्बेडकर के मूवमेन्ट को महाराष्ट्र में पूरा करने की इजाजत दे दी है, इसलिए बाकी काम मेरे ऊपर छोड़े। जो रिपब्लिकन पार्टी के नेता कहते रहे हैं कि यह कामयाब होऊ सकत नाही उसको कामयाब करना मेरी जिम्मेदारी है। सिर्फ महाराष्ट्र में ही नहीं बल्कि देशभर में कामयाब करना मेरी जिम्मेदारी है। मैं उस जिम्मेदारी को जरूर और बड़े पैमाने पर निभाऊँगा, ऐसा आप लोगों को भरोसा देते हुए बहुत सी बातें जो मुझे कहनी थी, मैं उत्तरी नागपुर में कह चुका हूँ। आप लोगों के सामने सिर्फ इस किस्म के खयालात रखते हुए आप लोगों को इस किस्म का भरोसा दिलाते हुए आप लोगों से रजा लूँगा। जय भीम–जय भारत।

साभार : बहुजन संगठन नई दिल्ली सोमवार 8 से 14 अप्रैल 2002 वर्ष 22 अंक 10

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

1 मार्च उल्लास दिवस (रावण जयन्ती) पर विशेष

अगर रावण दुष्ट और क्रूर था तो देवता उसकी पूजा क्यों करते थे ?

जो रावण वेदज्ञ और यज्ञ का अुनष्ठाता था, जिसे वाल्मीकि ने महात्मा कहा है और जिस की प्रजा में वेदों और यज्ञादि का पर्याप्त प्रचार था, उसे दुष्ट और नीच क्यों समझा जाता है?

राम कथाकारों द्वारा रावण जैसे पराक्रमी, तेजस्वी और महाज्ञानी के असंगत चित्रण के मूल में क्या आर्य अनार्य के भेदभाव और मनोमालिन्य की प्रवृत्ति नहीं है ?

रावण दुष्ट था या महात्मा ?

लंकेश्वर रावण पुण्यात्मा और महापुरूष था। रामायण में वाल्मीकि ने उसे 'महात्मा' कहा है। जो लोग रावण को रामलीला में अपमानजनक विशेषणों से स्मरण करते हैं वे वास्तव में रावण के चरित्र को नहीं जानते. जिसे वाल्मीकि ने 'महात्मा' कहा, उसे 'नीच' और 'दुष्ट' कहना केवल दुराग्रह है। जो लोग अज्ञान के कारण पक्षपातपूर्ण दृष्टि से रावण की निंदा करते हैं, वे वाल्मीकि रामायण में सुंदरकांड के ये श्लोक पढ़े :

महात्मनो महद्वेश्म् महारत्न परिच्छद्म।
महारत्न समाकीर्ण ददर्श स. महाकपिः।
–वाल्मीकि रामायण, 6/13–14
सर्व कामैरुतांच पानभूमिं महातमनः
–वाल्मीकि रामायण, 11/12

प्रातःकाल का सुहावना समय है, हनुमान सीता जी की खोज में व्यस्त है। महावीर ने हर राक्षस के घर वेदमंत्रों की ध्वनि सुनीः

षंडगवेदविदुषां क्रतुप्रवरयाजिनाम्।
शुश्राव ब्रह्मघोषंश्च विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 18/12

रावण के महलों में कभी कोई नीच काम नहीं किया जाता था, सदा वेद प्रतिपादित काम किए जाते थे. इसलिए वे देवता, जिन्हें लोग पूजते हैं, रावण के घर को पूजते थे। देखिए :

गृहाणि नानावसुराजतिानि देवासरैश्चापि सुपूजितानि।
सर्वेश्च दोषैः परिवर्जितानि कपिर्ददर्श स्वबलार्जितानि।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 18/127/3

यदि कोई यह कहे कि देवता, रावण को महान होने के कारण नहीं बल्कि भयभीत हो कर पूजते थे, क्योंकि रावण ने अपने अपने बल से देवताओं को जीत लिया था, तो यह जान लेना चाहिए कि ऐसा करने से देवों की दुर्बलता और कायरता ही प्रकट होती है. जो देवता रावण के भय से उस की पूजा करते थे, ये देवता कैसे ! लोग देवताओं से आशा करते हैं कि उन्हें वे दुष्टो से बचाएं। पर जब रावण से थरथर कांपते थे और उस की पूजा करते थे, तब भजा वे दुष्टों से कैसे बचा सकते हें ?

वास्तव में बात यह है कि रावण के चरित्र की श्रेष्ठता और उस के पवित्र आचरण तथा महान कार्यों को देख कर ही देवता उस की पूजा करते थे।

लंका को देख कर हनुमान ने आश्चर्य से कहा :

स्वर्गोऽय देवलोकाऽयमिंद्रस्येयं पुरी भवते।
सिद्धिर्वेयं पराहि स्यादित्मन्यत मारुतीः।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 9/31

यदि रावण निर्दयी या दुष्ट होता तो उस के समकालीन हनुमान उस के पाप आचरण से परिचित होते। यदि परिचित थे तो फिर निर्दयी दुष्ट राजा की नगरी को उन्होने स्वर्ग, देवलोक व इंद्रलोक क्यों कहा ? जाहिर है कि रावण एक कुशल प्रशासक था। तभी हनुमान ने उस की राजधानी की भरपूर प्रशंसा की।

रावण के आचरण पर सीताहरण का कलंक लगाया जाता है। रावण ने सीता का हरण किया, यह सच है। पर सीता हरण के समय उस के मन में काम वासना नहीं थी। उस ने काम वासना से नहीं बल्कि बदला लेने की भावना से सीताहरण किया था।

रावण ने राम वनवास के चौदहवें वर्ष के आरंभ में सीताहरण किया और वह भी बहन के नाक कान कट जाने के बाद। यदि सीताहरण में रावण की काम वासना मूल कारण थी तो वह पहले तेरह वर्ष कहां रही ? क्या वृहन्नला (अर्जुन) के समान रावण को भी नपुंकस रहने का शाप मिला था ? स्पष्ट है कि सीताहरण का मूल कारण बदले की भावना थी, काम वासना नहीं।

रावण संयमी और सदाचारी था, कामी नहीं। वाल्मीकि कहते हैं :

न तत्र काश्चित्प्रमदाः प्रसह्य वीर्योपपन्नेन गुणेन लब्धाः।
न चान्यकामापि न चान्यपूर्ण बिना बराहाँ जनकात्मजांताम्।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 9/10

रावण के महलो में अन्यकामा (और को चाहने वाली) कन्या तथा अन्यपूर्वा (विवाहित) स्त्री न थी। यदि वह चाहता तो बलपूर्वक अन्यकामा कन्याओं को तथा अन्यपूर्वा स्त्रियों को अपने महलों में रख सकता था। लेकिन इसे वह अनुचित समझता था। वह पापभीरु था। यदि उस ने कभी परस्त्री की आरे आंख उठाई होती तो वाल्मीकि उसे सदाचार का प्रशंसापत्र ने देते। उत्तरकांड़ वाली कथा कपोलकल्पित है।

उत्तकांड वाल्मीकि ने नहीं लिखा था। यदि उन्होंने लिखा होता तो क्या वह रावण द्वारा वेदवती पर किए गए अत्याचार से परिचित न थे ! यदि थे तो उन्होंने रावण को प्रशंसापत्र क्यों दिया ? अतः उत्तरकांड वाल्मीकि कृत नहीं है, बल्कि बाद में किसी ने जोड़ दिया है।

देखना यह है कि पहल किस ने की– राम ने या रावण ने। पहले राम ने शूर्पणखा के नाक कान काटवा दिए, फिर रावण ने सीताहरण किया। पहले राम ने हाथ उठाया, फिर रावण ने। आप कहेंगे की शूर्पणखा भगवान राम के पास गई और उन्हें तंग करने लगी, इसीलिए उन्होंने नाक कान काट दिए।

यह माना जा सकता है कि शूर्पणखा ने राम विवाह के लिए प्रार्थना की, जो सर्वथा न्यायासंगत थी। उत्तर में राम ने विवाहित होने के कारण अपनी विवशता प्रकट कर के कहा कि लक्ष्मण अविवाहित है, उस के पास जाओं, पर लक्ष्मण ने उसे राम के पास भेज दिया। और राम ने फिर लक्ष्मण के पास। इस तरह वे दोनों वीर एक स्त्री का उपहास करते रहे।

क्या यह सत्य है कि लक्ष्मण अविवाहित थे? यदि नहीं तो राम ने एक स्त्री से झूठ बोलने में संकोच क्यों नहीं किया। राम ने यह जानते हुए भी कि लक्ष्मण विवाहित हैं। शूर्पणखा को उस के पास क्यों भेजा। मर्यादा पुरुषोत्तम की महानता इस में थी कि वह शूर्पणखा से स्पष्ट कह देते कि हम दोनों भाई विवाहित हैं। हम विवाह नहीं करेंगे। आप चली जाएं। किंतु उन्होंने सचाई को छिपा कर एक स्त्री से अनुचित उपहास किया। फिर राम ने संकेत कर के लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के नाक कान कटवा दिए।

यदि कोई कहे कि शूर्पणखा सीता को खाने दौड़ी थी, इसलिए राम ने उस के कान नाक कटवा लिए, तो हम पूछते हैं कि इस से पहले शूर्पणखा ने कितने स्त्रीपुरुषों को खाया था ? क्या इस का रामायण में कहीं उल्लेख है। यदि नहीं तो राम को यह भय क्यों व्यापा. क्या लक्ष्मण द्वारा नाक कान कटवाने के अतिरिक्त राम का सीता के बचाव का और कोई उपाय न सूझा। क्या नाक कान कट जाने पर शूर्पणखा सीता को नहीं खा सकती थी।

कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति बड़ी सुगमता से इस परिणाम पर पहुंच सकता है कि शूर्पणखा सीता को खाना नहीं चाहती थी। उस ने केवल धमकी दी थी। आजकल भी लोग एक दूसरे को कच्चा खाने की धमकी देते हैं। मगर आज तक किसी ने किसी को कच्चा खाते नहीं देखा।

शूर्पणखा के नाक कान काट कर राम ने रावण का भारी अपमान किया, जिसे वह सह न सका और उस ने राम को अपमानित करने की ठान ली। क्योंकि राम ने उस की अबला बहन पर अपना शौर्य दिखा कर रावण का अपमान किया था, इसलिए रावण ने भी 'शठे शाठ्यं समाचरेत' की नीति अपनाई। बदले में उस ने उन की पत्नी का हरण कर के उन का अपमान किया।

इसमें संदेह नहीं कि 'वाल्मीकि रामायण' में कई जगह रावण के लिए 'दुरात्मा' शब्द का प्रयोग किया गया है और दो एक स्थलों पर तो महात्मा के साथ घृणित विशेषण भी प्रयुक्त किए गए हैं। इन का उल्लेख आगे किया जाएगा।

एक पुस्तक में एक ही पुरूष के संबंध में परस्पर विरोधी विशेषणों का प्रयोग आश्चर्यजनक है। स्मृतियों में भी परस्पर विरोधी बातें मिलती हैं, परंतु उन का समाधान भी उन्हीं में मौजूद होता है। स्मृति और इतिहास की परस्पर विरोधी बातों में जमीन आसमान का अंतर है। स्मृति में परस्पर विरोधी बातों का समाधान होने के बावजूद उन की स्वतंत्र सत्ता भी रहती है। किंतु इतिहास में जहां एक व्यक्ति के संबंध में परस्पर विरुद्ध बातों का उल्लेख होगा, वहां समाधान में दोनों बातों में से एक बात को सर्वथा निर्मूल सिद्ध करना पड़ेगा।

शूर्पणखा नाक कान कट जाने पर रोती चिलाती रावण के दरबार में पहुंची। उस ने बीस भुजाओं वाले रावण को सिंहासन पर बैठे देखा :

विंशदुंजं दशग्रीव दर्शनीयपरिच्छदम्
–वाल्मीकि रामायण,
अरण्यकांड, 32/8

परंतु सीता की खोज में लंका पहुंच कर हनुमान ने रावण को पलंग पर सोते देखा तो उस के एक मुख और दो भुजाएं थी :

तस्य राक्षससिंहस्य निश्चय क्रम महामुखात्।
–वाल्मीकि रामायण,

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सुदंरकांड, 10/24

कांचनागंदसत्रद्वौ ददश स महात्मनः।
विक्षिरौ राक्षसेंद्रय भुजाविंद्र ध्वजोपमौ।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 10/12

संपाती वानरों को रावण की पहचान बताते हुए कहता है कि 'भिन्नंजनययोपयः' अर्थात उस का शरीर सुरमे से ढेर के समान काला है परंतु :

राजर्षिपितृदैत्यानां गंधर्वाणां
च योषितः.
राक्षसानां च याः कन्यास्तस्य
कामवशं गताः
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 10/68–69

राजर्षि, ब्राह्मण और दैत्यों की कन्याएं सुरमे के ढेर के समान काले रावण पर मोहित हो गईं। रावण का काला होना और फिर कन्याओं का मोहित होना परस्पर विरोधी बातें हैं।

शूर्पणखा ने लंका में रावण को नीचे लिखे विशेषणों से युक्त देखाः

प्राप्तयज्ञहरम् दुष्टं ब्रह्मघ्नं क्रूरकारिणम्।

हनुमान ने लंका पहुंच कर क्या देखा, इस के बारे में लिखा गया है :

षंडगवेदविदुषां क्रुतप्रवरयाजिनाम्।
शुश्राव ब्रह्मघोषांच विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 18/2

इस श्लोक से स्पष्ट है कि राक्षस यज्ञ करते थे। रावण की प्रजा में भी यज्ञों का प्रबल प्रचार था। फिर उस के लिए 'प्राप्तयज्ञहरणम्' विशेषण कितना असंगत है, और वह शूर्पणखा के मुख से।

सीता की खोज करते हुए हनुमान ने महलों के भीतर जा कर रावण की सोई हुई पटरानियों को देखा

सहस्त्रं वरनारीणा नानावेषविभूषितम्।
परिवृत्तेऽर्धरात्रे तु पाननिद्राव शंगतम्।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 9/34

हनुमान उन के अद्वितीय सौदर्य पर विस्मित हो गएः

इमानि मुखपद्मिनी नियतं मत्तषट्पदाः।
अंबुजानीव फुल्लानि प्रार्थयंति पुनःपुनः।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 9/38–39

परंतु जब हनुमान को सीता का पता न चला तब वह एक स्थान पर बैठ कर सोचते हैं :

विरूपरूपा विकृता विवर्चसो महानता
दीर्घविरूपदर्शनाः।
समीक्ष्यत्सा राक्षसराजयोषितो लयाद्विष्ट
जनकेश्वरात्मजा।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 12/4

इस श्लोक में रावण की स्त्रियों को जो विशेषण दिए गए हैं। उन से पता चलता है कि भूमंडल पर उन स्त्रियों से बढ़कर बदशक्ल कोई स्त्री नहीं थी। एक स्थान पर पद्मिनी कहना और दूसरे स्थान पर बदशक्ल बता देना कितना विपरीत और हास्यास्पद है।

उच्छेत्तारं च धर्माणां परदाराभिमदर्शनम्।
पुरी भोगवतीं प्राप्य पराजित्य
च वासुकिम्।
तक्षकस्य प्रियां भार्यां पराजित्य
जहार यः।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 32/12–14

परंतु सारी रामायण में कहीं भी कोई ऐसा स्थल नहीं मिलता जहां रावण ने किसी परस्त्री का सतीत्व हरण किया हो या उसे बलपूर्वक अतःपुर में लाया हो।

रावण के महलों में अन्यपूर्वा स्त्रियां न थी। एक स्थल पर उस पर तक्षक की स्त्री के हरण का कलंक लगाया जाता है और दूसरे स्थल पर उस के महलों में अन्यपूर्वा स्त्री का अभाव बताया जाता है। आखिर उस ने तक्षक की स्त्री को हर कर रखा कहां था ?

इन परस्पर विरोधी बातों से स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण में प्रक्षिप्त श्लोक भरे गए हैं। यह सोचना मूर्खता होगी की खुद वाल्मीकि ने एसी विरोधी बातें लिखी होंगी।

यह भी विचारणीय है कि रामायण में जहां कहीं असंबद्ध निंदात्मक बातें हैं। वे सब रावण और राक्षसों से संबंधित हैं। यह क्यों ?

यह एक सर्वसम्मत बात है और रामचंद्र के भक्त भी इसे स्वीकार करते हैं कि रावण षडंग वेदज्ञ था। उस की प्रजा में वेदों का काफी प्रचार था। घर–घर वेदो का स्वाध्याय होता था। अतः रावण को वेदज्ञ और यज्ञ का अनुष्ठाता बताने वाले, तथा प्रशंसापरक श्लोक वाल्मीकिकृत हैं और निंदात्मक प्रक्षिप्त हैं।

जिस रावण की राजधानी में प्रत्येक राक्षस वेदज्ञ था, जिस के यहां बड़े–बढ़े यज्ञ होते थे, उस रावण को 'प्राप्तयज्ञहरणम्दुष्टं ब्रह्मघ्न क्रूरकारिणम' आदि विशेषण दे कर राम भक्तों ने अपनी मानसिक संकीर्णता और धार्मिक अनुदारता का परिचय दिया।

बदला लेने की भावना से किए गए सीताहरण रूपी अपराध पर रावण को घृणित विशेषणों से युक्त कर राम भक्तों ने पृथ्वी और आकाश के कुलाबे मिलाए हैं। पर किसी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम से यह नहीं पूछा कि उन्होंने भाई को संकेत कर के एक अबला के नाक कान क्यों कटवा दिए। आखिर उस का अपराध क्या था ? यही कि उस ने विवाह के लिए प्रार्थना की थी, जो उस समय 'अनावृताः किलपुरा' के अनुसार साधारण प्रथा थी। एक बड़ा प्रश्न यह है कि यदि राम शूर्पणखा से विवाह नहीं करना चाहते थे तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में दो टूक उत्तर क्यों नही दिया, तिल का ताड़ क्यों बनाया. झूठ बोल कर उसे लक्ष्मण के पास क्यों भेजा !

कुछ लोग कहते हैं कि रावण अत्याचारी था। वह मुनियों से रुधिर का कर लेता था। ये बातें रावण को जनता की दृष्टि में गिराने के लिए गढ़ी गई हैं।

यह कुकर्म वह सपने में भी न कर सकता था. सीताहरण के समय जटायु से रावण की मुठभेड हुई। उस के आचरण के बारे में जटायु ने कहा'

दशग्रीव स्थितो धर्मे पुराणे सत्यसंश्रयः
भ्रातस्तवं निंदितं कर्म कर्त्तु नार्हसि सांप्रतम्।
–वाल्मीकि रामायण,
अरण्यकांड, 50/3

यदि रावण ने सीताहरण से पहले कभी मुनियों से रुधिर का कर लिया होता तो जटायु उसे फटकारता और धिक्कारता। वह उस से पहले पाप (मुनियों से रुधिर का कर) की बात भी कहता। किंतु जटायु उसे सनातन धर्मानुरागी कहता है। और 'सांप्रतम' शब्द से स्पष्ट ध्वनि निकलती है कि सीताहरण से पहले रावण ने कोई निंदित कर्म नहीं किया था।

सीताहरण के अपराध के बाद उस प्रकार की कपोल कल्पित कथाएं रावण को कलंकित करने के लिए रची गईं।

रावण संस्कृति का संरक्षक या विध्वंसक?

भारत के अधिकांश धार्मिक ग्रंथों में रावण को एक दुराचारी राजा के रूप में चित्रित किया गया है, जिस के आतंक और पापाचार से संसार को मुक्त करने के लिए स्वयं भगवान विष्णु को राम रूप धारण करना पड़ा, धार्मिक रूढ़ियों, मान्यताओं अथवा हृदय पर पड़े परंपरागत संस्कारों के कारण चाहे हम उस को दुराचारी और रामकथा के खलनायक रूप में मानते हों लेकिन बुद्धि की कसौटी पर रावण का यह रूप सर्वथा अवास्तिविक, अनैतिहासिक और एकांगी प्रतीत होता है।

ऐतिहासिक रूप से रामकथा से संबंधित सर्वप्रथम ग्रंथ वाल्मीकि रामायण है, जिस के अनुसार राक्षसों की तीन शाखाएं–विराध, दानव ओर राक्षस–प्रमुख थीं रावण तीसरी शाखा का नायक था। व्युत्पत्ति के आधार पर राक्षस 'रक्ष' धातु से बना है, जिस का अर्थ है रक्षा करने वालां वाल्मीकि के उत्तकांड (सर्ग 4–11) में आई एक कथा के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा ने जलसृष्टि कर के उस की रक्षा के निमित्त प्राणियों की उत्पत्ति की। इन मे जो क्षुधापीड़ित थे, बोल उठे, 'रक्षामः' हम रक्षा करेंगे और क्षुधित नहीं थे, बोले 'यक्षामः' अर्थात् हम यज्ञ करेंगे। इस प्रकार रक्षक प्राणी 'राक्षस' और यज्ञ करने वाले प्राणी 'यक्ष' कहलाए।

रावण का पिता आर्य और माता अनार्य थी। इस प्रकार उस क शरीर में आर्य और अनार्य दोनों का मिश्रण था। उस के पिता जगत प्रसिद्ध विश्रवा ऋषि तथा माता सुमाली असुर की पुत्री कैकसी थी। सुमाली यक्षों से अपनी खोई लंका वापस लेना चाहता था। अपने षड्यंत्र को सफल बनाने के लिए उस ने अपनी पुत्री कैकसी को पुत्र प्राप्ति की कामना से विश्रवा ऋषि के पास भेजा। ऋषि की कृपा से कैकसी के कुंभकरण, रावण और विभिषण आदि पुत्र तथा शुर्पणखा पुत्री पैदा हुई। विश्रवा मुनि ने पहले रावण के संबंध में भविष्यवाणी कर दी थी। अतएव जन्म के समय ही रावण के दस विशाल सिर, चमकीले बाल, 20 भुजाएं और काले अंजन के सामन वर्ण था।

विश्रवा की भविष्यवाणी और रावण की भंयकर आकृति के कारण माता कैकसी प्रारंभ से ही उस से घृणा करने लगी। परिणामस्वरूप रावण प्रांरभ से ही हीनग्रंथि पड़ गई, जिस ने उस के महत्त्वाकांक्षी होने में बहुत सहायता दी। रावण के दस सिर और 20 भुजाओं का वर्णन वाल्मीकि रामायण में भी आया है। लेकिन एक तो यह वर्णन एकाध स्थल पर ही है (शायद प्रक्षिप्त अंश हो), दूसरे आधुनिक विद्वानों ने इस को प्रतीक मात्र ही माना है। वास्तव में अधिकांश बलवानों की भांति उस की गरदन बड़ी थी। अतएव वह 'दसग्रीव' अथवा एक ही गरदन में दस गरदनों का बल रखने वाला कहलाया।

दरअसल 'दशानन' या 'दशशीश' का भाव यह है कि उस ने दसों दिशाओं को जीता अथवा वह दस प्रकार के मुकुट या दस मणियों वाला किरीट धारण करता था। यदि नाम के आधार पर ही उस को दस सिर और 20 भुजाओं वाला माना जाए तो 'दशरथ' भी दशरथ वाला माना जाएगा। वास्तव में दस सिर और 20 आंखे और 20 भुजाएं उस की अप्रतिहत विजयों, सूक्ष्म दृष्टि और अद्वितीय वीरभाव के प्रतीक हैं। इस प्रकार रावण एक सिर और दो भुजाओं वाला मानव था, जैसा वाल्मीकि रामायण के हनुमान द्वारा लंका में रावणदर्शन, अशोक वाटिका तथा मंदोदरी विलाप आदि प्रसंगो से भी सिद्ध होता है. अनार्य होने के कारण उस का वर्ण अवश्य श्यामल था, जैसा कि आज उस जाति के लोगों में पाया जाता है।

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

ईसा से लगभग 38 शती पूर्व आंध्रालय (आस्ट्रेलिया) निवासी रावण, जो कि एक दुर्धर्ष वीर, अति महत्त्वाकांक्षी, प्रतापी, मेधावी और साहसी व्यक्ति था, अपने नाना सुमाली द्वारा प्रेरित हो कर अपने सौतेले भाई कुबेर से अपने नाना की सोने की लंका को मुक्त कर अपने अधिकार में करने के लिए लंका जा पहुंचा. पहले तो सीधे सादे कुबेर ने अपने इस सौतेल भाई का स्वागतसत्कार किया। लेकिन उस का मंतव्य ज्ञान होने पर अपने पिता के पास जा पहुंचा। पिता रावण की शक्ति से अच्छी तरह परिचित थे। इसलिए उनकी सलाह के अनुसार कुबेर ने लंका खाली कर दी और रावण ने उस पर अधिकार कर लिया।

यद्यपि लंका पहले से ही समृद्ध थी, लेकिन रावण के अधिकार में आते ही उस का यश वैभव दूरदूर तक फैल गया। महत्त्वाकांक्षी रावण इतने से ही संतुष्ट नही होसकता था, इसलिए शीघ्र ही उस ने अंगद्वीप (सुमात्रा), यवद्वीप (जावा), मलयद्वीप (मलाया), शंखद्वीप (बोर्नियो), कुशद्वीप (अफ्रीका), वराह द्वीप (मेडगास्कर) आदि दक्षिणवर्ती द्वीप समूहों पर भी विजय प्राप्त कर ली।

यह उस के अद्भुत शौर्य और पराक्रम का ही फल था कि शीघ्र ही उस ने देव, दानव, असुर, गंधर्व, यक्ष आदि तत्कालीन सभी प्रमुख जातियों पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस प्रकार रावण ने सर्वाधिक विस्तृत और शक्तिशली साम्राज्य की स्थापना की। इस संबंध में स्मरणीय यह है कि रावण से पूर्व कोई भी राजा यह कार्य नहीं कर सका था। निस्संदह अपने समय में रावण सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट था न केवल राजनीतिक रूप से वरन सांस्कृतिक दृष्टि से भी रावण बहुत महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली व्यक्ति था। राक्षस धर्म और संस्कृति का प्रथम व्याख्याता, स्थापक और निवारक भी रावण ही था। उस ने आदित्य (यानी–सूर्य) संस्कृति और क्षस (यक्ष) संस्कृति का समन्वय कर के राक्षस संस्कृति की स्थापना की। उस समय भारतीय आर्यों की बहिष्कार नीति के कारण दक्षिणी भारत में बहिष्कृत आर्यों की अनेक जातियां बस गई थीं। रावण ने इन सब को अपनी राक्षस संस्कृति में दीक्षित कर लिया, रावण के वीरत्व से भयभीत हो कर अन्य धर्मावलंबियों ने भी रावण की आधीनता से साथ साथ उस की संस्कृति को भी ग्रहण कर लिया, इस प्रकार शीघ्र ही राक्षस संस्कृति तत्कालीन संस्कृतियों में सर्वप्रधान हो गई। राक्षस संस्कृति का मूलमंत्र था अखिल विश्व को एक धर्म और संस्कृति में दीक्षित करना। इस प्रकार रावण प्रथम व्यक्ति था जिस ने अखिल विश्व एकता का उद्घोष किया। इस उद्देश्य से सर्वप्रथम उसी ने वेद का संपादन, वैदिक ऋचाओं पर नवीन टिप्पणियां, मूलमंत्रों की व्याख्या और व्यवहार अध्याय में वृद्धि की। रावण द्वारा प्रतिपादित यह नवीन भाष्य ही आज 'कृष्ण यजुर्वेद' के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में भी रावण की देन बहुमूल्य है। वास्तव में उस के महापंडित्य के संबंध में दो राय नहीं हो सकती।

प्रायः आर्य ऋषियों और रामकथा के रचयिताओं ने रावण पर परस्त्रीगामी, मांसहारी और यज्ञादि विरोधी होने के आरोप लगाए हैं, जब कि ये आरोप सर्वथा निर्मूल हैं और केवल आर्यो के एकांगी दृष्टिकोण के परिचायक हैं। रावण ने अधिकांश स्त्रियों को अग्निदीक्षा के पश्चात ही प्राप्त किया था, विलासिका, प्रहष्टरोमा, कुमुदवती, प्रभावती, सुभद्रा, माधुरी, अमृतप्रभा, केशिनी, कालिंदी, भद्रिका, दर्पकमाला, सौदामिनी, उज्जवला, पीरवा, अंजनिका, केशरावती, मदनसेना, चंद्रवती, वरुणसेना, विद्युंमाला तथा प्रधान महिषी मंदोदरी आदि सभी रानियों ने रावण को स्वयं वरा था, अथवा इन के पिताओं ने स्वयं ये रावण को प्रदान की थीं।

सीताहरण उस ने अपनी बहन शूर्पणखा के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिया किया था, सीताहरण वास्तव में उस के परस्त्रीगामी होने का नहीं, वरन् उस के श्रेष्ठ चरित्र और वीरत्व का परिचायक है. यदि वह चाहता तो क्या वह सीता का बलात्कार, अपमान अथवा अंगभंग नहीं कर सकता था ? लेकिन सीता को महीनों अपने अधिकार में रखने पर भी उस ने सीता को कोई कष्ट नहीं दिया। इसी प्रकार मांसाहार जब आर्यों तक में था तो फिर रावण पर ही यह आरोप क्यों ? यज्ञादि विरोध भी वास्तव में यज्ञों का नहीं वरन आर्य यज्ञ प्रणाली का था। दूसरी ओर रावण स्वयं एक बहुत बड़ा याज्ञिक था और उस ने कोई भी महत कार्य बिना यज्ञ के नहीं किया। स्वयं राम और रामकथाकार भी इस बात को स्वीकार करते हैं।

दूसरी ओर राम द्वारा बालि वध, सौमित्र द्वारा शूर्पणखा अपमान और मेघनाद वध, राम द्वारा सीता की अग्निपरीक्षा और उस मे सफल होने पर भी निष्कासन क्या राम के गुण माने जाएंगे ? (रामभक्त क्षमा करें) यह सत्य है कि राम ने रावण का वध किया, लेकिन क्या विभिषण और सुषेण जैसे घर के भेदियों के बिना यह संभव था? विभीषण की शरणागति वास्तव में राम की कूटनीतिक विजय थी, जिस ने रावण की पराजय में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस प्रकार रावण का वध राम ने केवल सत्य के आधार पर नहीं वरन साम, दाम, दंड, भेद आदि सभी राजनीतिक और कूटनीतिक चालों का प्रयोग कर के किया था। वास्तव में, राम और रावण कि किसी भी दृष्टि से तुलना करने पर सिद्ध हो जाता है कि इन में रावण ही अधिक आदर्श था, स्वयं राम तक उस की वीरता, विद्वत्ता और अतुलनीय नीति ज्ञान के प्रशंसक थे।

प्रायः विजयादशमी अथवा दशहरे का संबंध रावणवध से जोड़ा जाता है। लेकिन गणना द्वारा यह बात असंगत सिद्ध होती है। भारतीय गणना के अनुसार दशहरा आश्विन मास की दशमी के दिन मनाया जाता है जब कि रावणवध वैशाख कृष्णा चतुर्दशी या चैत्र कृष्णा अमावस्या को हुआ था। वाल्मीकि ने सीताहरण और रामविलाप वर्षा ऋतु मे माना है, वर्ष के पश्चात आश्विन में सीता की खोज प्रारंभ हुई, दो मास खोज में लगे। माघ में सैन्यदल चला और एक मास में समुद्र पार किया, इस प्रकार युद्ध चैत्र बैशाख में हुआ जो 84 दिन चला। अतएव गणना से सिद्ध होता है कि दशहरे और रावणवध में बहुत समय का अंतर है।

निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि रावण महान पंडित था, रामकथाकारों ने उस का जो असंगत चित्रण किया है वह केवल आर्य अनार्य के पारस्परिक भेदभावों और मनोमालिन्य के कारण किया है। अन्यथा रावण जैसा पराक्रमी, तेजस्वी और महाज्ञानी उस युग में दूसरा नहीं था।

साभार : कितने खरे आदर्श हमारे ?
सं. : राकेश नाथ

क्या 'बुद्ध' का 'कर्म' का सिद्धान्त ब्राह्मणी 'कर्म' के सिद्धान्त के समान ही हैं?

1. बुद्धधर्म का कोई भी दूसरा ऐसा सिद्धान्त नहीं है जिसने इतनी 'गलतफहमी' पैदा की हो, जितनी इस 'कर्म' के सिद्धान्त ने।
2. बुद्धधर्म में 'कर्म' का क्या स्थान है और क्या वास्तविक महत्व है?
3. अज्ञ हिन्दू बेसमझी के ही कारण केवल शब्दों की समानता की ओर देखकर कहते हैं कि ब्राह्मणवाद वा हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्म एक ही है।
4. ब्राह्मणों का पढ़ा–लिखा और कट्टर वर्ग भी यही कहता है। वह अज्ञ जनता को गलत रास्ते पर चलने के लिये जान–बूझकर कहता है।
5. पढ़े–लिखे ब्राह्मण भली प्रकार जानते हैं कि बुद्ध का 'कर्म' का सिद्धान्त ब्राह्मणी 'कर्म' के सिद्धान्त ब्राह्मणी 'कर्म' के सिद्धान्त से सर्वथा भिन्न है। लेकिन तब भी वे यही कहे जाते हैं कि बुद्ध–धर्म वही है जो ब्राह्मणवाद या हिन्दु–धर्म है।
6. शब्दों की समानता के कारण उनको अपना झूठा तथा दुष्ट प्रचार करने में आसानी हो जाती है।
7. इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि स्थिति की पूर्ण परीक्षा की जाय।
8. भगवान बुद्ध का 'कर्म' का सिद्धान्त–शाब्दिक समानता कितनी ही हो अपने अर्थ में ब्राह्मणी 'कर्म' के सिद्धान्त के समान हो नहीं सकता।
9. दोनों की मूल स्थापनायें एक दूसरे से परस्पर इतनी अधिक भिन्न है कि परिणाम एक ही हो सकता। दोनों के दो भिन्न परिणाम होने ही चाहिये।
10. सुविधा के लिये हिन्दु 'कर्म' की मान्यताओं को क्रमशः इस प्रकार गिना जा सकता है
11. हिन्दु 'कर्म' का सिद्धान्त 'आत्मा' की मान्यता पर निर्भर करता है। बौद्ध नहीं। क्योंकि बौद्धधर्म में तो 'आत्मा' है ही नहीं।
12. ब्राह्मणी 'कर्म' का सिद्धान्त वंशानुगत है।
13. यह एक जन्म से दूसरे जन्म तक चलता रहता है। यह इसलिये क्योंकि 'आत्मा' का संसरण होता है।
14. 'कर्म' के बौद्ध–सिद्धान्त के बारे में यह बात सत्य नहीं है। यह भी इसीलिये कि बौद्धधर्म में 'आत्मा' नहीं है।
15. 'कर्म' का हिन्दु–सिद्धान्त शरीर से पृथक एक 'आत्मा' पर आधारित है। शरीर मरता है, तो 'आत्मा' उसके साथ नहीं मरता। 'आत्मा' फुरे से उड़ जाता है।
16. 'कर्म' के बौद्ध–सिद्धान्त के बारे में यह बात भी सच नहीं है।
17. 'कर्म' के हिन्दु–सिद्धान्त के अनुसार जब आदमी कोई कर्म करता है तो उसके 'कर्म' के दो परिणाम होते हैं। एक तो उस 'कर्म' से वह करने वाला प्रभावित होता है, दूसरे उस 'कर्म' का उसके 'आत्मा' पर प्रभाव पड़ता है।
18. वह जो भी 'कर्म' करता है, उसके 'आत्मा' पर उसका प्रभाव पड़ता ही है।
19. जब आदमी मरता है और जब 'आत्मा' उसका शरीर छोड़ कर निकल भागती है (या निकल भागता है) तो 'आत्मा' उन संस्कारों से संस्कृत रहता है।
20. यह संस्कार ही है जो उसके भावी जन्म और स्थिति का निर्णय करते हैं।
21. हिन्दु 'आत्मवाद' का बौद्ध 'अनात्मवाद' से कुछ भी मेल नहीं।
22. इन कारणों से 'कर्म' का बौद्ध–सिद्धान्त और 'कर्म' का हिन्दु–सिद्धान्त न एक है और न एक हो सकता है।
23. इसलिये 'कर्म' के बौद्ध–सिद्धान्त और 'कर्म' के ब्राह्मणी–सिद्धान्त को एक ही बताना महज मूर्खता है।
24. अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि इस शाब्दिक माया–जाल से सावधान रहना चाहिये।

साभार :
भगवान बुद्ध और उनका धर्म
पेज संख्या 267 से 268 तक
डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

नमो बुद्धाय जय भीम साथियों

आप दिन पर दिन देख रहें हैं हमारे बहुजन समाज के लोग दिन पर दिन किसी ना किसी पार्टी में जाकर के मूर्ख बन रहे हैं क्योंकि हमारे लोगों का बुद्धि बल दबा दिया गया है छीन लिया गया है, उसका भी उदाहरण मैं आपको दूंगा।

तथागत गौतम बुद्ध कहते थे मैं सिर्फ मार्ग दाता हूं मैं सिर्फ मार्ग बता सकता हूं चलना आपको खुद है अगर आप मुझे भगवान मानो और मुझसे मांगोगे तो मैं आपको कुछ भी देने वाला नहीं हूं शिक्षा के अग्रदूत ज्योतिबा राव फुले कहते थे अपने हक अधिकारों को पाने के लिए क्रांति करो छत्रपति शाहूजी महाराज कहते थे जब तक भारत में रहने वाली सभी जनता को बराबरी का हक नहीं मिल जाता बराबरी का सम्मान नहीं मिल जाता तब तक संघर्ष करते रहो डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर कहते थे शिक्षित बनो संगठित रहो संघर्ष करो रामास्वामी पेरियार नायर कहते थे जब तक देखना नहीं तब तक मानना नहीं।

एक बार संत शिरोमणि रविदास महाराज को किसी व्यक्ति ने बोल दिया यह तो चमार है तब संत शिरोमणि रविदास जी महाराज ने कहा मैं क्या चमार पूरा जग चमार पूरी दुनिया तो चमड़ा मांस और रक्त से मिलकर के बनी है कबीरदास जी कहते थे ज्ञान को जितना बांटो उतना बढ़ता है ओशो कहते थे ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है इसको ढूंढने में समय व्यर्थ ना करें बहन कुमारी मायावती कहती हैं हमेशा चुनाव के लिए तैयार रहना साथियों हमारे सभी महापुरूषों ने यह बातें क्यों कहीं क्योंकि मैं भी 2009 से अंबेडकर मिशन में लगा हुआ हूं मैंने यह चीज देखी हमारे महापुरूषों ने जितनी भी बातें कहीं हमारे लोगों ने एक भी नहीं मानी इसलिए आज भी जूते खा रहे हैं इसलिए आज 85 परसेंट का हुक्मरान समाज गुलाम बनकर बैठा है।

ज्ञान और विज्ञान के देवता तथागत गौतम बुद्ध ने क्यों कहा मैं सिर्फ मार्ग दाता हूं क्योंकि तथागत गौतम बुद्ध को पता था लोग मुझे भगवान मानने लग जाएंगे जबकि गौतम बुद्ध हमें विज्ञान की ओर ले गए उन्होंने हमें आवश्यकता के अनुसार निर्माण करना सिखाया आवश्यकता अविष्कार की जननी है अगर आपको नदी के उस पर जाना है आपको नाव बनानी पड़ेगी तैर कर जाना पड़ेगा अगर आसमान में उड़ना है प्लेन बनाना पड़ेगा अगर आप आंख बंद करके भगवान से प्रार्थना करोगे नदी का दूसरा किनारा मेरे पास आ जाए वह कभी नहीं आएगा ऐसे व्यक्ति को मूर्ख ही नहीं महामूर्ख कहेंगे जो आंख बंद करके प्रार्थना करता मैं आसमान में चला जाऊं मैं नदी के उस किनारे चला जाऊं क्योंकि कर्म ही प्रधान है इसलिए बुद्धा शांति के और विज्ञान के दूत हुए हैं बुद्ध की प्ररेणा लेकर के चीन, अमेरिका, जापान, रूस, टोक्यो कई देश आज टेक्नोलॉजी के मामले में बहुत आगे निकल गए हैं और हम अभी तक अंधविश्वास पाखंडवाद में ही उलझ रहे हैं इसलिए हमें विज्ञान की ओर जाना है तर्क वितर्क करना सीखना है तथागत गौतम बुद्ध के जाने के बाद में कुछ मनुवादी लोगों ने चार वर्ण बनाकर के भारत की सीधी-सादी गरीब जनता का बुद्धि बल छीन लिया सिर्फ एक वर्ण को शिक्षा मिलती थी बाकी के तीन को नहीं मिलती थी इसलिए यह शिक्षा से वंचित रह गए इनका दिमाग धीरे-धीरे बंजर बनता गया उदाहरण आज भी आपके सामने ही हैं हमारे बच्चों को आठवीं तक पास करके उनका बुद्धि बल छीना जा रहा है इसलिए कर्म पर विश्वास करो।

ज्योतिबा राव फुले कहते थे हक अधिकार मुफ्त में नहीं मिलते उनके लिए लड़ना पड़ता है ज्योतिबा राव फुले के मन में एक विचार आया था बच्चे की पहली गुरू उसकी मां होती है क्यों ना सबसे पहले महिलाओं को पढ़ाया जाए उन्होंने सर्वप्रथम अपनी धर्मपत्नी माता सावित्रीबाई फुले को पढ़ाया और वह भारत की पहली महिला शिक्षिका बनी आज जितने भी महिलाएं पढ़ लिख करके आगे बढ़ रही हैं वह महान क्रांति के अग्रदूत ज्योतिबा राव फुले माता सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख बेगम और उस्मान भाई की देन है हिंदू धर्म ग्रंथों में महिलाओं को पढ़ने लिखने का अधिकार नहीं था जब ज्योतिबा राव फुले ने शिक्षा की पहल की थी तब कुछ षड्यंत्रकारी लोगों ने ज्योतिबा राव फुले को अपने ही घर से पिताजी को कह कर निकलवा दिया गया था तब फातिमा शेख नाम की बेगम ने और उस्मान भाई ने अपना बाडा दिया था ज्योतिबा आप बहुत अच्छा काम कर रहे हो महिला शिक्षा के लिए आप हमारे यहां पर रहिए और महिलाओं को पढ़ाईये महिलाएं पढ़ेगी तो निश्चित ही सब में समानता आएगी।

छत्रपति शाहूजी महाराज कोल्हापुर के राजा थे उनके राजा होते हुए पाखंड इतना फैला हुआ था वह खुद रसोई घर में नहीं जा सकते थे अगर चले भी गए तो सारा बना हुआ खाना फेंक दिया जाता था तब छत्रपति शाहू जी महाराज के मन में विचार आया मैं एक राजा हूं उसके बाद भी मेरे प्रति इतना पाखंड है तो यह भोली-भाली सीधी-सादी जनता के ऊपर कितना अत्याचार करते होंगे इसलिए उन्होंने ठान लिया था मुझे एक ऐसे नेता को तैयार करना होगा जो इस जनता की लड़ाई लड़ सके इसलिए उन्होंने संविधान निर्माता डॉ बाबा साहेब अंबेडकर को पढने लिखने में मदद की और अपने राजमहल में पहला आरक्षण छत्रपति शाहूजी महाराज ने दिया था जो कि एक कुर्मी पाटीदार थे छत्रपति शाहूजी महाराज का मानना था जब तक भारत में रहने वाले सभी लोगों को बराबरी का हक नहीं मिल जाता सभी समाज के लोग एक जगह काम नहीं करने लग जायेंगे तभी सभी में एक दूसरे के प्रति स्नेह बढ़ेगा और मानवता विकसित होगी इसलिए उन्होंने सबसे पहले अपने राजमहल में आरक्षण शुरू किया जहां पर सभी जाति के लोग काम करने लगे और उन्होंने डॉक्टर अंबेडकर को 85 परसेंट बहुजन समाज का नेता बनाया और जो डॉक्टर बाबा साहेब अंबेडकर ने मूकनायक अखबार शुरू किया था उसमें उनकी मदद की और पढ़ाई में भी मदद की।

डॉ बाबा साहेब अंबेडकर ने कहा शिक्षित बनो संगठित रहो संघर्ष करो डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने ऐसा क्यों कहा था क्योंकि अगर आप शिक्षित नहीं होंगे आपको काला अक्षर भैंस बराबर दिखेगा डॉक्टर अंबेडकर ने संगठित होने के लिए क्यों कहा था संगठन में शक्ति होती है डॉक्टर अंबेडकर ने संघर्ष करने के लिए क्यों कहा था क्योंकि हक अधिकार मुफ्त में नहीं मिलते उनके लिए संघर्ष करना पड़ता है जब आपके सारे हक अधिकार छीन लिए जाएंगे तब संगठन ही एक ऐसी चीज होगी जो आपकी लड़ाई लड़ेगा पर साथियों क्या जो डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर ने कहा था हमने उस चीज को माना डॉक्टर अंबेडकर ने कहा था शिक्षित बनो संगठित रहो संघर्ष करो पर हमारे लोग शिक्षित होना बंद हो गए संगठित होना बंद हो गए डायरेक्ट संघर्ष के लिए उत्तर गए आज जो हमारे महापुरूषों के नाम से नए नए संगठन बन रहे हैं उनमें लोग जय भीग तो बोलते हैं पर उन लोगों का ढंग से बाबा साहब अंबेडकर का जीवन परिचय याद नहीं है डॉक्टर अंबेडकर का मिशन याद नहीं है इसलिए यह हुक्मरान बनने की जगह नौकर बनते जा रहे हैं हम जय भीम बोलते हैं पर जय भीम की शक्ति है कहां जय भीम की शक्ति वोट में कन्वर्ट क्यों नहीं हो पा रही है जब बाबासाहेब अंबेडकर ने कहा है जब तक दलितों की अपनी खुद की पार्टी नहीं होगी आप का उद्धार नहीं हो सकता फिर हम हमारा वोट हमारे बहुजन समाज की पार्टी के अलावा अन्य पार्टियों को क्यों दे रहे हैं इस बात को हमें समझना पड़ेगा साधु संतों का मंदिर छोड़कर के राजनीति में जाना मतलब आप समझ लीजिए सारे हक अधिकार वहीं से मिलेंगे भगवान आपको कुछ भी देने वाला नहीं है।

साहब कांशीराम क्यों कहते थे जिस समाज की राजनीतिक जड़े मजबूत नहीं होती वह समाज कभी भी राजा नहीं बन सकता साहब कांशीराम ने अपनी किताब चमचा युग में कहा मैंने सिर्फ डॉक्टर अंबेडकर की एक किताब पढ़ी मैं पागल हो गया सबसे पहले नौकरी से त्यागपत्र दिया समाज सेवा में लग गया ds4 बनाई ds4 के बाद में बामसेफ बनाई और तीन बार उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी की सरकार बना दी जैसे ही हमारी पार्टी पावर में आई हमने 2500000 दलितों को एक साथ नौकरी दे दी हमारे लोगों को शिक्षा नहीं मिलती थी बड़े-बड़े विश्वविद्यालय बना दिए हमारे लोगों के पास जमीन नहीं थी हमने पहले ही नारा दे दिया था जो जमीन सरकारी है वह जमीन हमारी है आज जो परिवर्तन पार्क लखनऊ को मनुवादी मीडिया बदनाम करता है बहन कुमारी मायावती ने तो हाथी ही हाथी बना दिए पर मीडिया यह बात क्यों नहीं बोलता जो भारत के अंदर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में परिवर्तन पार्क बना है उसके अंदर 85 परसेंट बहुजन समाज में जन्मे महापुरूषों की विचारधारा छुपी हुई है वह मीडिया कभी नहीं बताता भारत का इतिहास वह नहीं है जो हमें पढ़ाया गया है इतिहास तो और कुछ है जिसे छुपाया गया है जैसे कि मीडिया को खबर बताने से ज्यादा पैसा खबर छुपाने का मिलता है साहब कांशीराम कहते थे लोग बोलते हैं बाबा साहब अंबेडकर ने रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया बनाई थी उससे हटकर कांशीराम साहब ने बहुजन समाज पार्टी क्यों बनाई उसका उदाहरण मैं आपको देता हूं डॉ बाबा साहेब अंबेडकर के इस दुनिया के जाने के बाद में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया ने पूरे महाराष्ट्र में सिर्फ एक सीट पर समझौता कर लिया था कांग्रेस के साथ यह बात साहब कांशीराम को हजम नहीं हुई साहब कांशीराम ने कहां जो 85 परसेंट का बहुजन समाज के वह सिर्फ एक सीट पर चुनाव लड़ेगा इसलिए साहब कांशीराम नाराज होकर के उत्तर प्रदेश आ गए वहां पर काम करना शुरू किया बहुजन समाज पार्टी बनाई और उसमें वह सफल हो गए साहब कांशीराम ने बहुजन समाज पार्टी तो बना ली पर उस का सिंबल हाथी ही रखा जो बाबा साहब अंबेडकर ने दिया था और आज पूरे उत्तर प्रदेश में आपको बहुजन समाज पार्टी का काम दिख रहा है इसलिए साथियों हमारी राष्ट्रीय पार्टी बहुजन समाज पार्टी है हमें उसको ही वोट करना है जब बहन कुमारी मायावती भारत के प्रधानमंत्री बनेगी तब भारत का नक्शा ही बदल जाएगा अब हमें हाथी को उठाना है और बहुजन समाज पार्टी की सरकार बनानी है।

बहन कुमारी मायावती क्यों कहती हैं हमेशा चुनाव के लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि जो मनुवादी लोग सत्ता में बैठे हैं वह हमेशा कुछ न कुछ षड्यंत्र करते रहते हैं क्योंकि यह माफिया लोग जिनको हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट का जज बनाते हैं उनके ऊपर भी विश्वास नहीं करते हैं साथियों मैं आपको छोटा सा उदाहरण देना चाहता हूं आज क्या कारण है राष्ट्रीय पार्टी बहुजन पार्टी की सरकार चार-चार बार उत्तर प्रदेश में सरकार रही वह पार्टी आज सिर्फ एक सीट पर सिमट गई उसका कारण यह है बाबा साहब अंबेडकर ने हमें आरक्षण दिया रिजर्वेशन दिया वोट का अधिकार दिया उसकी बदौलत समाज में चमचे और दलाल पैदा हुए बहन कुमारी मायावती के अकेले संघर्ष करने से क्या होगा जिसके ऊपर बहन कुमारी मायावती विश्वास करती है उसी व्यक्ति को दूसरी पॉलिटिकल पार्टियां खरीद लेती हैं उदाहरण आपके सामने हैं और जो ओरिजिनल अंबेडकरवादी व्यक्ति रहता है उसके सामने दूसरी पॉलिटिकल पार्टियां एक और नकली अंबेडकरवादी खड़ा कर देती है।

उदाहरण बाबा साहब अंबेडकर के सामने कजरोलकर को खड़ा करना इसलिए साहब कांशीराम ने कहा था हमारे लोग डीलर में और लीडर में फर्क ही नहीं समझ पाए जिस दिन अंबेडकरवादी लोगों को मीडिया बढ़ा चढ़ा करके बताने लग जाए उस दिन समझ लेना वह अंबेडकरवादी बिक चुका है उदाहरण आपके सामने हैं एक भी बार सरकार नहीं बनी और उनको फॉर्च्यूनर गाड़ियां और प्लेन मिलने लग गए हैं इसलिए साथियों हमें देखना है हमारी राष्ट्रीय पार्टी को ही हमें वोट करना है उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी हो हराने के लिए 108 पार्टियां चुनाव लड़ती है इसलिए हमें इस बात को समझना होगा आखिर गंदी गटर कहां से बह रही है हमें उस गटर को इधर-उधर पलटाने के बजाय बंद ही करना होगा हमारा सोशल मूवमेंट हमें लगातार चलाना होगा बैठे हुए हाथी को फिर से उठाना होगा और बहन कुमारी मायावती का हाथ हमें मजबूत करना होगा मैं आपको उदाहरण पहले ही दे चुका हूं अगर आप ओरिजिनल अंबेडकरवादी हो कुछ पॉलिटिकल पार्टियां आपके सामने किसी दूसरे व्यक्ति को खड़ा कर देगी क्योंकि अब पॉलिटिकल पार्टियों को पता है बहन कुमारी मायावती के भतीजे आकाश आनंद जी अब मैदान में आ चुके हैं डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के वंशज राजरत्न अंबेडकर साहब ने कह दिया है मरीजों नेता है बहन कुमारी मायावती है और हमें बैठे हुए हाथी को फिर से खड़ा करना है इसके लिए कुछ दलालों को दूसरी पॉलिटिकल पार्टियां चंदा देकर के ऊपर उठा रही है ताकि वह आने वाले समय में बहुजन समाज पार्टी के वोट काट सकें यही वही चमचे हैं जो साहब कांशीराम ने चमचा युग में लिखे थे बड़े चमचे बड़े अंबेडकरवादी के सामने खड़े होते हैं और छोटे चमचे सीधी-साधी भोली भाली जनता को हमारी भाषा बोल कर के गुमराह करते हैं इसलिए साथियों जो लोग सत्ता में बैठे हैं वह किसी भी तरीके से आप को बरगला करके कभी भी चुनाव करवाएंगे क्योंकि चुनाव आयोग भी उनके हाथ में हैं इसलिए बहन कुमारी मायावती कहती है हमें हमेशा चुनाव के लिए तैयार रहना चाहिए ताकि यह जब भी चुनाव करवा ले हमारा वोट हमारी राष्ट्रीय पार्टी को जाए बहुजन समाज पार्टी को जाए हमारी एक ही राष्ट्रीय पार्टी है बहुजन समाज पार्टी जिसका सिंबल हाथी जो डॉक्टर बाबा साहब अंबेडकर ने दिया था और अपने अथक प्रयासों से साइकिल की यात्रा पूरे भारत में करके साहब कांशीराम ने अपने अथक प्रयासों से उसे सीचा है और उसको बड़ी गंभीरता से बहन कुमारी मायावती ने संभाला है उस राष्ट्रीय पार्टी को हमें हमारी पार्टी मानना है बहन कुमारी मायावती को हमारी नेता मानना है एक झंडा एक नेता एक आवाज और इस देश का हुक्म देने वाला समाज बनाना है।

तेजपाल सोलंकी
राष्ट्रीय भीम सेना प्रदेश संयोजक, मध्य प्रदेश
मो.: 9179825381

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

बीसवीं पहेली – कलि वर्ज्य अथवा पाप को पापकर्म घोषित किए बिना स्थगन की ब्राह्मणवादी कला

ब्राह्मणों की कलिवर्ज्य नामक हठधर्मी बहुत कम लोगों को ज्ञात है। कलियुग को अन्य ब्राह्मणवादी हठधर्म से इसको भ्रमित नहीं करना चाहिए।

कलिवर्ज्य की हठधर्मी में कुछ प्रथाओं और व्यवहारों को गिनाया गया है जो अन्य युगों में व्यावहारिक थीं लेकिन कलियुग में उनके अनुपालन पर पाबंदी है। इन अनुदेशों के प्रसंग विभिन्न पुराणों में यत्र–तत्र उपलब्ध हैं, परन्तु आदित्य पुराण में उन्हें संहिताबद्ध करके संग्रहीत कर दिया गया है। कलिवर्ज्य प्रथाएं निम्नांकित हैं :

1. विधवा से पुत्र उत्पन्न करने हेतु पति के भाई की नियुक्ति।
2. किसी (विवाहित) स्त्री का पुनर्विवाह (उसका जिसका विवाह पक्का नहीं हुआ) (अथवा उसका जिसका विवाह पक्का हो गया था) दूसरे पति के साथ प्रथम पति की मृत्यु के उपरांत।
3. तीन द्विज वर्णो के बीच अन्य वर्णों की कन्याओं से विवाह।
4. आततायी ब्राह्मण का सीधे युद्ध में भी वध।
5. किसी द्विज से व्यवहार (उसके साथ खान–पान जैसा व्यवहार) जो समुद्र यात्रा पर जाता है, चाहे उसने प्रायश्चित भी क्यों न कर लिया हो?
6. सात्र का उपनयन कराना।
7. जल हेतु कमण्डल लेकर चलना।
8. लम्बी यात्रा पर जाना।
9. गोमेध में गाय की बलि।
10. श्रौतमणि यज्ञ तक में मद्यपान।
11. और 12 अग्नि होत्र के पश्चात बचे हुए प्रसाद को ग्रहण करने हेतु उसमें प्रयुक्त कलछी को चाटना और बाद में अग्निहोत्र में उस कलछी का प्रयोग करना।
13. शास्त्रानुसार आश्रम जीवन यापन में प्रवेश।
14. (जन्म और मृत्यु होने पर) व्यवहार और वैदिक ज्ञान के आधार पर अशुचिता की अवधि घटाना।
15. प्रायश्चित स्वरूप मौत का विधान ब्राह्मणों के लिए।
16. नैतिक पाप (स्वर्ण) चोरी को छोड़कर और पापियों (महापातकों) के साथ संपर्क होने पर (गुप्त) प्रायश्चित।
17. वर, अतिथि और पितरों को मंत्रों के साथ जानवरों के मांस की भेंट।
18. औरस तथा दत्तक पुत्र के अतिरिक्त अन्य को पुत्रों के रूप में स्वीकार करना।
19. उन व्यक्तियों के साथ प्रायश्चित के उपरांत भी संपर्क, जिन्होंने उच्च जाति की महिला के साथ संभोग किया है।
20. यदि किसी वृद्ध अथवा सम्मानित व्यक्ति की पत्नी ने परपुरूष से संभोग किया है और उसके लिए वह प्रताड़ित की गई है, उसका परित्याग।
21. किसी एक व्यक्ति के लिए दूसरे का वध।
22. झूठ छोड़ना।
23. जीवन के लिए (पैसा लेकर) किसी देवता विशेष की मूर्ति की पूजा का संकल्प।
24. मृत्यु के उपरांत अग्निक्रिया के अधीन फूल चुनने के पश्चात उन व्यक्तियों का स्पर्श।
25. ब्राह्मण द्वारा पशु की वास्तविक बलि।
26. ब्राह्मण द्वारा सोम पादप का विक्रय।
27. छह बार का भोजन अथवा छ समय तक भूखा रहने के उपरांत भी ब्राह्मण का शूद्र से भी भोजन ग्रहण करना।
28. ब्राह्मण गृहस्थ का अपने शूद्र वर्ण के दास के हाथ से बना भोजन ग्रहण करना, गोशाला में और उन व्यक्तियों के हाथ का भोजन करना जो बटाई पर उसकी खेती करती हैं।
29. बहुत लम्बी तीर्थ यात्रा पर जाना।
30. गुरू पत्नी के साथ वैसा व्यवहार जैसा स्मृतियों में गुरू के लिए निर्धारित है।
31. ब्राह्मण द्वारा विपरीत परिस्थितियों में गलत कार्यों द्वारा जीवनयापन के लिए कल के लिए भोजन की परवाह न करना।
32. जातकर्म होम के समय ब्राह्मण द्वारा अरनी (अग्नि उत्पन्न करने के लिए दो लकड़ियों के खण्ड) स्वीकार करना जिसके अनुसार शिशु के जातकर्म से उसके पाणिग्रहण तक के संस्कार कराने का कार्यक्रम हो।
33. ब्राह्मण द्वारा सतत यात्रा।
34. बांस निर्मित फूंकनी के बिना आग में मुंह से फूंक मारना।
35. शास्त्रों में वर्णित प्रायश्चित के पश्चात भी किसी ऐसी स्त्री को जाति में सम्मिलित होने की स्वीकृति देना जो बलात्कार से कलंकित हो चुकी हो।
36. सन्यासी द्वारा सभी वर्णों (शूदों सहित) से भिक्षा ग्रहण करना।
37. जमीन से निकाले जाने वाले जल का पान करने हेतु दस दिन तक प्रतीक्षा।
38. अध्यापक को दीक्षांत पर (मांगने पर) शास्त्रानुसार दक्षिणा।
39. ब्राह्मण और अन्यों के लिए शूद्रों से भोजन बनवाना।
40. वृद्धों द्वारा चट्टान से अथवा आग में कूदकर आत्महत्या।
41. झूठे पानी का सम्मानित व्यक्तियों द्वारा आचमन चाहे वह गाय का ही झूठा क्यों न हो?
42. पिता और पुत्र के मध्य झगड़े में साक्षी को दंडित करना।
43. संन्यासी जहां रात हो जाए, वहीं शयन करें।

इस कलि वर्ज्य संहिता के विषय में यह आश्चर्य की बात है कि इसके महत्व को पूर्ण समझा नहीं गया। इसे उन वर्जित कार्यों की सूची मात्र समझा गया जो कलियुग में निषिद्ध हैं। परन्तु वर्जित कार्यों की सूची के पीछे और कुछ भी है। इसमें संदेह नहीं है कि कलि वर्ज्य संहिता में अनेक कार्यों के लिए वर्णन है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या इन कार्यों को अनैतिक माना गया है, निंदित पापकर्म अथवा समाज में हानिकर? इसका उत्तर है नहीं। प्रश्न यह है कि यदि वर्जित है तो निंदित क्यों नहीं हैं? यही कलि वर्ज्य संहिता की पहेली है। बिना निंदित बताए प्राचीनकाल के इन व्यवहारों को वर्जित घोषित करने की प्रणाली प्राचीन के विपरीत है। एक उदाहरण लेते हैं। आपस्तम्ब धर्म सूत्र में सम्पूर्ण ज्येष्ठ पुत्र को ही दिया जाना वर्जित है। परन्तु वह इसकी निंदा करता है। ब्राह्मणों ने यह प्रणाली क्यों अपनाई कि वर्जित हैं किन्तु निंदित नहीं। इस परित्याग के पीछे कोई विशेष कारण होना चाहिए। वह कारण क्या है?

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

साभार :
बाबा साहेब डा. अम्बेडकर
संपूर्ण वाङ्मय खंड 8
पेज संख्या 237 से 240 तक
डॉ. बी. आर अम्बेडकर

सीखते रहें–खासकर विरोधियों से

''21वीं सदी के अनपढ़ वे नहीं होंगे, जो पढ़–लिख नहीं सकते, बल्कि वे होंगे, जो सीख नहीं सकते, सीखे हुए को भुला नहीं सकते और दोबारा नहीं सीख सकते।''

हम सभी ने उस मैनेजर के बारे में सुना होगा, जो अपने प्रतिस्पर्धी के आगे निकल जाने पर आगबबूला हो उठता है। या जो इस बारे में चीखता–चिल्लाता है कि उसके हाथ से यह ऑर्डर निकल जाना कितना अन्यायपूर्ण है या जब ग्राहक उससे दूर चला जाता है, तो वह हत्या के मूड में आ जाता है, क्योंकि उसे लगता है कि उसे छीन लिया गया है। गलत, गलत, गलत। मेरा यकीन करें, अगर प्रतिस्पर्धी आपके विचार, ग्राहक, अनुबंध, सेल्स, स्टाफ और आमदनी चुरा रहा है, तो (अ) आप स्वयं दोषी हैं, (ब) आपके पास यह सीखने का बहुत अच्छा अवसर है कि आप काम ज्यादा अच्छी तरह कैसे किया जाए।

बेहतर प्रतिस्पर्धी हमें जितनी अच्छी तरह सिखा सकता है, उतना कोई और नहीं सिखा सकता। ऐसा क्या है, जो वह कर रहा है? हम उससे क्या सीख सकते हैं? हम उसके पदचिन्हों पर कैसे चल सकते हैं? वह जो कर रहा है, हम उसे कैसे अपना सकते हैं और उससे लाभ उठा सकते हैं? वह जो कर रहा है, उससे आगे निकलकर हम बाजार में अपनी हिस्सेदारी कैसे बढ़ा सकते हैं?

हर सप्ताह इस जाँच में थोड़ा समय लगाएँ कि प्रतिस्पर्धी क्या कर रहे हैं, क्योंकि अगर वे प्रभावी है (और प्रतिस्पर्धी हमेशा होते हैं), तो वे गौर से देख रहे होंगे कि आप क्या कर रहे हैं। प्रतिस्पर्धियों को जानने–और उनके साथ विचारों के आदान–प्रदान–में कुछ समय लगाएँ। देखिए, अगर आपके पाँच प्रमुख प्रतिस्पर्धी है और आप उनसे जानकारी आदान–प्रदान करते हैं, तो आप सिर्फ एक जानकारी देते हैं। लेकिन बदले में आपको पाँच जानकारियाँ मिलती हैं, क्योंकि वे पाँच लोग आपको अपने विचार, जानकारी, शोध आदि बताएँगे। हमें प्रतिस्पर्धा से कभी नहीं डरना चाहिए। इसे तो गले लगाना चाहिए। इससे बाजार का विस्तार होता है। इससे आप चौकस बने रहते हैं। इससे आपको सीखने का सच्चा अवसर मिलता है– सच्चा इसलिए क्योंकि वह वास्तव में हो रहा है। यह प्रशिक्षण का अभ्यास नहीं है और इसमें लीगो शामिल नहीं है।

अगर आप प्रतिस्पर्धा से डरते हैं, तो इसका मतलब है कि आप दरअसल अपनी खुद की अक्षमता से डर रहे हैं। अगर आप जानते हैं कि आप अच्छा काम कर रहें, तो प्रतिस्पर्धा आपको छू भी नहीं सकती। अगर आप अच्छा काम नहीं कर रहे हैं, तो प्रतिस्पर्धा आपको रौंदकर आगे निकल सकती है– और आप यह बात जानते हैं, ठीक उसी तरह जिस तरह आप जानते हैं कि आप अच्छा काम नहीं कर रहे हैं।

''अगर आप प्रतिस्पर्धा से डरते हैं, तो इसका मतलब है कि आप दरअसल अपनी खुद की अक्षमता से डर रहे हैं।''

साभार – मैनेजमेंट के नियम
पृष्ठ सं. 168 से 169
रिचर्ड टेंपलर